RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

12वीं इतिहास | ARJUN BATCH

विद्रोही और राज

e26r-yetd-918j-36t9-0r88

1857 का आंदोलन

अध्याय 10 • भाग 01

27 अगस्त 2026 | 04:00 PM



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER






1857 का विद्रोह
मुगल
दिल्ली
बहादुर शाह जफर
मेरठ
अवध
बंगाल

परिचय

1. 1757 ——— 1857 (+100)
2. सैनिक → हार नाराज़
3. ज़मींदार → हार नाराज़
4. पूर्व राजा
5. उत्तर भारत
6. अंग्रेज़
7. किसान

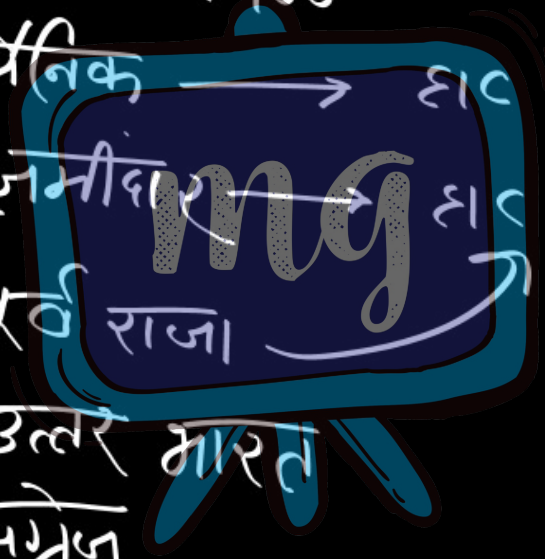

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कारण



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

परिचय



- विदेशी शासन का प्रारम्भ – 1757 प्लासी के युद्ध के बाद।
  - 100 वर्ष बाद
- 1857 में विदेशी शासन के विरूद्ध पहला बड़ा आंदोलन भारतीयों के द्वारा किया गया।
- कारण : पिछले 100 वर्षों में कम्पनी के द्वारा जो अन्याय पूर्ण शासन भारतीयों पर किया वे सभी विद्रोह के कारण थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

क्रांति के कारण

राजनीतिक एवं प्रशासनिक कारण :-

- अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीति (लॉर्ड वैलेजली की सहायक संधि प्रथा एवं लॉर्ड डलहौजी की गोद निषेध प्रथा)।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1857 का विद्रोह

→ कारण। नीति

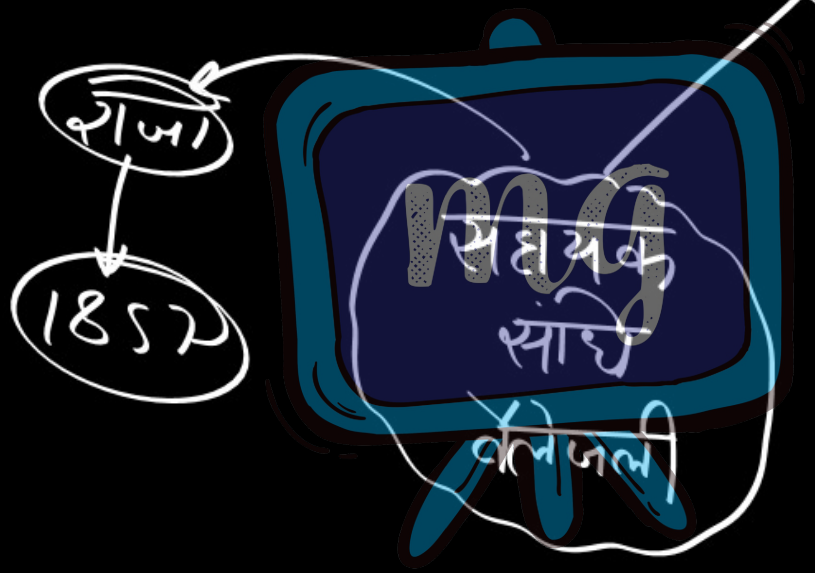

गोद निषेध → डलौजी
संधि

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

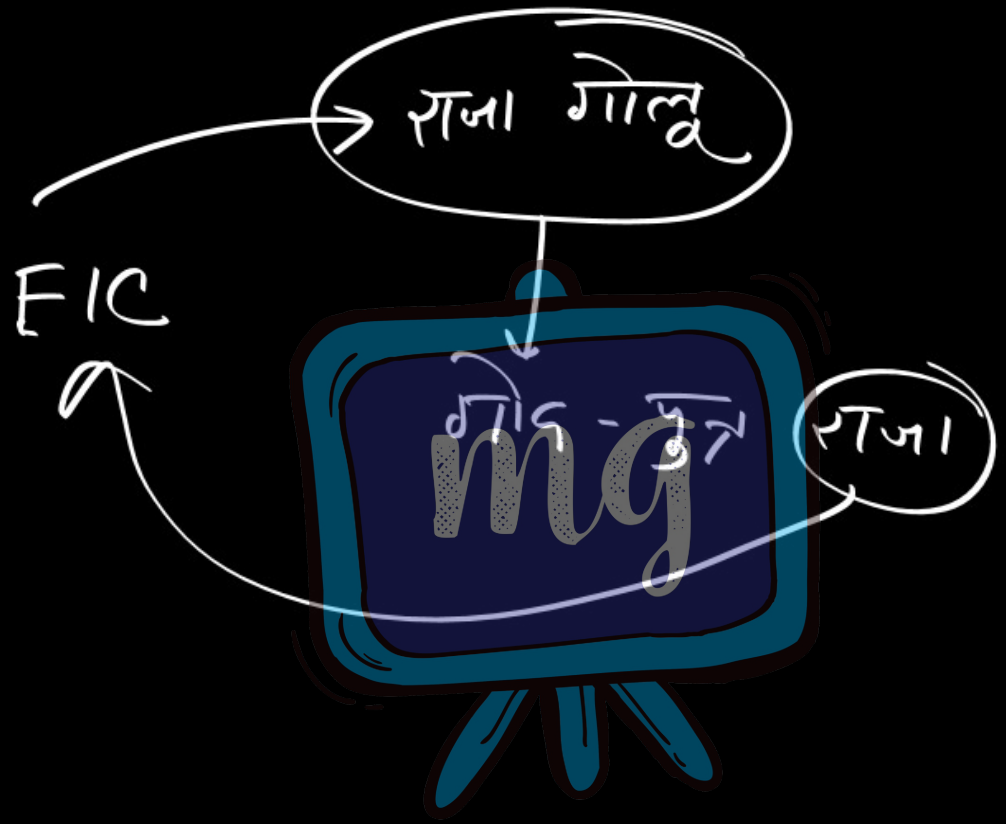

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

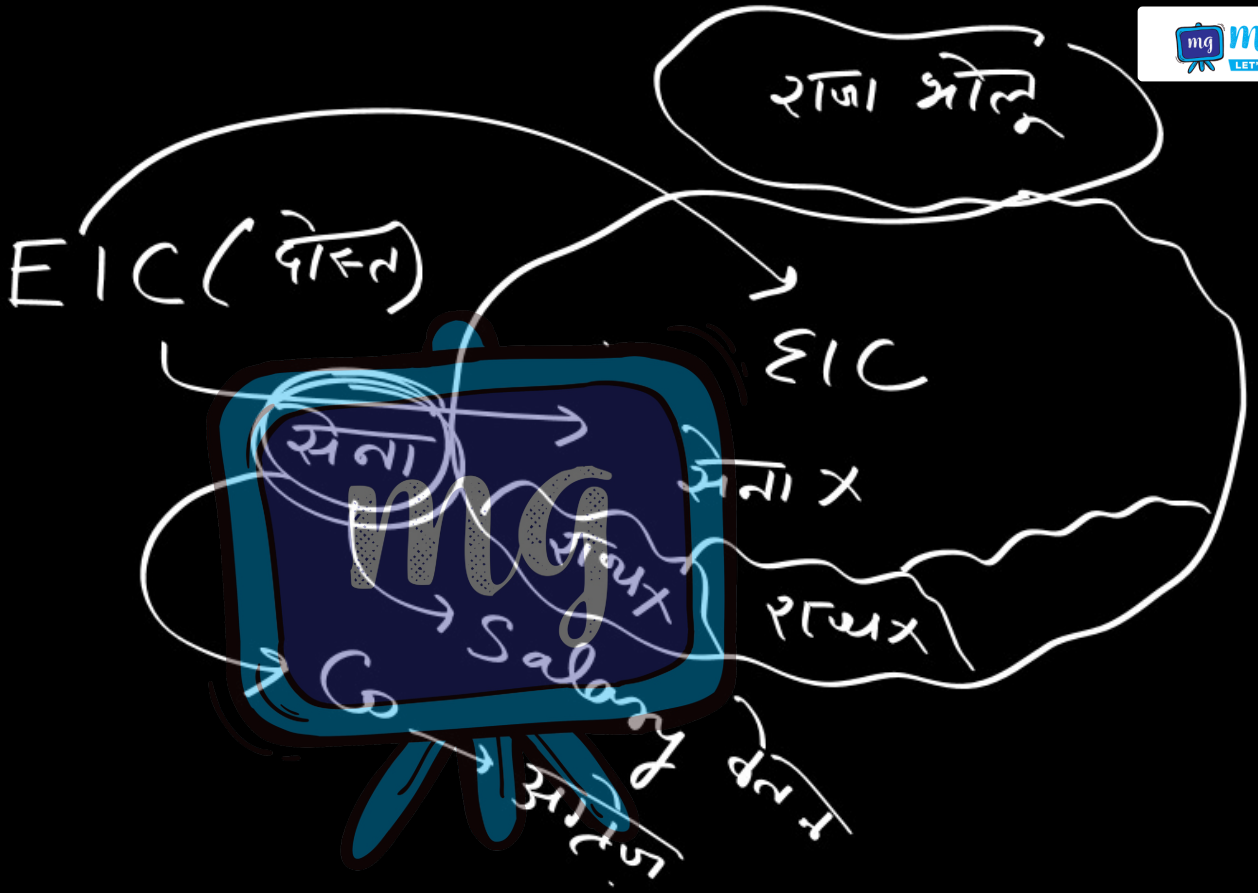

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

नीलाम

मुस्लिम

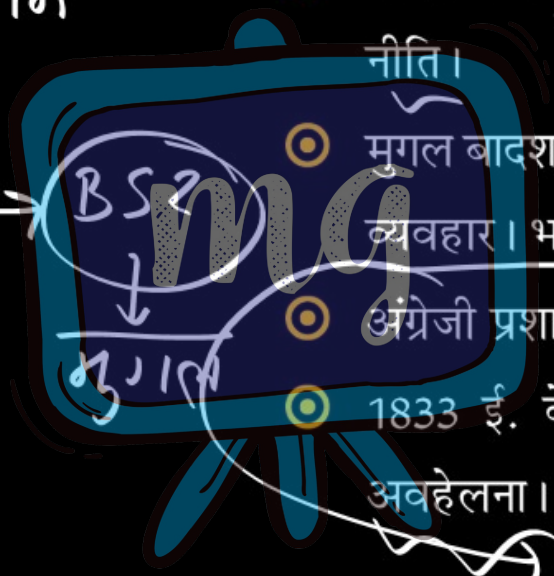

- भारतीय जमीदारों के विरूद्ध अपमानजनक व्यवहार नीति।
- मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर के प्रति अपमानजनक व्यवहार। भारतीय मुसलमानों में नाराजगी।
- अंग्रेजी प्रशासन में भ्रष्टाचार व लूट-खसोट।
- 1833 ई. के चार्टर एक्ट के प्रावधान तथा उनकी अवहेलना।

पाचती रिपोर्ट

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मुगल → कारीगर

1911 जमींदारी

रैयतवाड़ी

आर्थिक कारण :-

- भारतीय उद्योग-धंधों का शोषण एवं उनको चौपट
- अंग्रेजों द्वारा अपनाई गई दोषपूर्ण भू-राजस्व पद्धति।
- भारत के कपड़ा उद्योग के कच्चे माल पर कम निर्यात कर लगाना।
- इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप भारतीय परम्परागत उद्योगों का आर्थिक शोषण।
- भारतीय धन का निरंतर निष्कासन।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सामाजिक कारण :-

- अंग्रेजों द्वारा भारतीयों को घृणा की दृष्टि से देखना।
- दोषपूर्ण पाश्चात्य शिक्षा नीति।

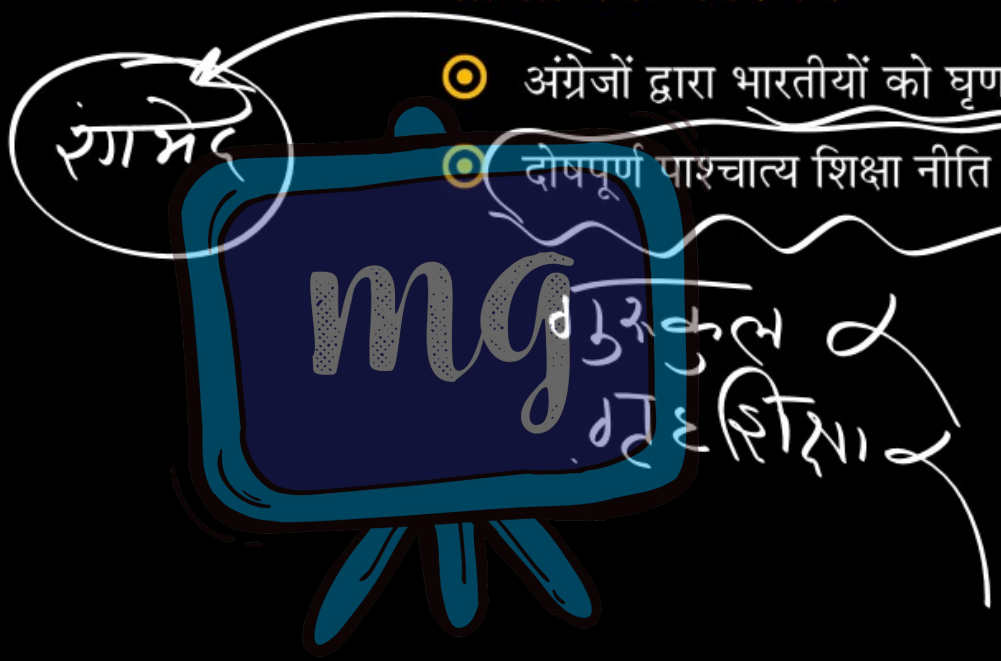

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

धार्मिक कारण :-

- अंग्रेजों द्वारा दोषपूर्ण पैतृक सम्पत्ती कानून का निर्माण।
- 1813 ई. के चार्टर एक्ट के तहत् ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार की स्वीकृति प्रदान करना।
- अंग्रेजों द्वारा मंदिरों व मस्जिदों में सम्पत्ती कर लगाना।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सैनिक कारण :-

क्रांति के पूर्व के विद्रोह-

- 1806 ई. का वैल्लोर विद्रोह, 1824 ई. का बैरकपुर विद्रोह, 1849 ई. का बंगाल की 22 वीं नेटिव इंफेन्ट्री आदि।
- विभिन्न युद्धों में अंग्रेजों की पराजय एवं भारी क्षति- अफगान युद्ध 1849 ई., क्रिमिया युद्ध, पंजाब युद्ध आदि।
- अंग्रेजी सेना में भारतीय सैनिकों की बढ़ती संख्या। (बंगाल तथा अवध में सैनिक असंतोष)।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- वेतन, भत्ते, पद तथा पदोन्नति के संबंध में भारतीय सैनिकों के साथ अपमानजनक व्यवहार।
- 1854 ई. के डाक घर अधिनियम के तहत् भारतीय सैनिकों को दी जाने वाली नि:शुल्क डाक सुविधा को समाप्त कर दिया गया।
- 1856 ई. में लॉर्ड कैनिंग के सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम के तहत् भारतीय सैनिकों को भारत से बाहर युद्ध में भेजा जाने लगा।

तात्कालिक कारण :-

- नई एनफील्ड राईफिल्स में प्रयोग होने वाले चर्बी लगे कारतूसों (सूअर तथा गाय की चर्बी) का प्रयोग।
- हिन्दू तथा मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाला।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

The Enfield rifle



This percussion-lock rifle was produced in the British Ordnance Factory at Enfield near London. It came into use in the British army in 1853. Shortly afterwards it was sent out for trials for the Company army in India. The 'rifling' on the inside of the barrel made the shot more accurate and gave the weapon a greater range. It was an enormous improvement on the Brown Bess smooth-bore flintlock musket which had been the standard weapon of all British forces since the early eighteenth century.

A greased cartridge

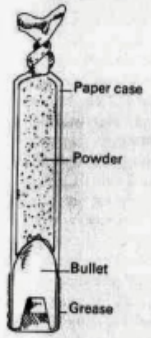

How it was loaded



1. *The soldier tears open the end of the cartridge with his teeth.*



2. *He pours the powder down the muzzle of his rifle. Then he thrusts the bullet, still wrapped in the cartridge paper which makes it a tight fit, into the muzzle.*



3. *He takes his ramrod from its slot beneath the rifle barrel, and rams paper, bullet and powder to the bottom of the barrel.*

ब्राउन बेश राइफल → एलफील्ड राइफल → चर्बी युक्त कारतूस इस्तेमाल होते थे

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1857 का विद्रोह

मेरठ → दिल्ली

BSZ
बेता



कारण

- प्रशासनिक
- धार्मिक
- सामाजिक
- सैन्य
- आर्थिक
- तात्कालिक → ब्राउन बेस ∝
  - ↓
  - एनफील्ड

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- तोप का गोला दागे
  गए + बिगुल बजाकर
  ↓
  विद्रोह की शुरुआत

सैन्य विद्रोह कैसे शुरू हुए ?

- प्रारम्भ – 10 मई 1857 को मेरठ छावनी से प्रारम्भ हुआ।

दिल्ली में विद्रोह

- नेतृत्व – बहादुरशाह II / बहादुर शाह जफर
- जैसे-जैसे विद्रोह की खबरें एक शहर से दूसरे शहर पहुंचती गयी वैसे-वैसे सिपाही हथियार उठाते गये।
- सिपाही किसी विशेष संकेत के साथ अपनी कार्यवाही शुरू करते थे।
- सबसे पहले उन्होंने शस्त्रागार पर कब्जा किया और सरकारी खजाने को लूटा।

किसान जमींदार देशभक्त

Q. 1857 - विद्रोह की शुरुआत किस प्रकार हुई ?

- विद्रोह में आम लोगों के भी शामिल हो जाने के साथ साथ विद्रोह का दायरा फैल गया।
- साहूकार और अमीर भी विद्रोहियों के गुस्से का शिकार बनने लगे।

ब्रिटिश शासन ताश के किले की तरह बिखर गया।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कमल रोटी

दिल्ली

मेरठ



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

असामान्य समय में सामान्य जीवन

विद्रोह के महीनों में शहरों में क्या हुआ? उथल-पुथल के उन दिनों में लोग अपनी ज़िंदगी कैसे जी रहे थे? सामान्य जीवन किस तरह प्रभावित हुआ? विभिन्न शहरों की रिपोर्टों से पता चलता है कि सामान्य गतिविधियाँ अस्त-व्यस्त हो गई थीं। *दिल्ली उर्दू अख़बार*, 14 जून 1857 की इन रिपोर्टों को पढ़िए :

> यही हालात सब्ज़ियों और साग (पालक) के भी हैं। लोग इस बात पर शिकायत कर रहे हैं कि बाज़ारों में कद्दू और बैंगन तक नहीं मिलते। आलू और अरबी अगर मिलती भी हैं तो बासी, सड़ी जिसे कुँजड़ों (सब्ज़ी बेचने वाले) ने रोक कर (जमाकर) रखा हुआ था। शहर में स्थित बाग़-बगीचों से कुछ माल चंद इलाकों तक पहुँच जाता है लेकिन ग़रीब और मध्यवर्ग वाले उन्हें देखकर बस होठों पर जीभ फिरा कर रह जाते हैं (क्योंकि वे चीज़ें खास लोगों के लिए ही हैं)।

> ... यहाँ एक और चीज़ पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए जिससे लोगों को बड़ा नुकसान हो रहा है। मामला यह है कि पानी भरने वालों ने पानी भरना बंद कर दिया है। ग़रीब शुरफ़ा (शरीफ लोग) खुद घड़ों में पानी भरकर लाते हैं और तब जाकर घर में खाना बनता है। हलालख़ोर हरामख़ोर हो गए हैं। कई दिनों से बहुत सारे मोहल्लों में कोई आमदनी नहीं हुई है और यही हालात बने रहे तो गंदगी, मौत और बीमारियाँ शहर की आबो-हवा ख़राब कर देंगी और शहर महामारी की गिरफ़्त में आ जाएगा, यहाँ तक कि आस-पास के इलाके भी उसकी चपेट में आ जाएँगे।

➲ इन दोनों रिपोर्टों तथा उस दौरान दिल्ली के हालात के बारे में इस अध्याय में दिए गए विवरणों को पढ़ें। याद रखें कि अख़बारों में छपी ख़बरें अकसर पत्रकार के पूर्वाग्रह या सोच से प्रभावित होती हैं। इस आधार पर बताएँ कि *दिल्ली उर्दू अख़बार* लोगों की गतिविधियों को किस नज़र से देखता था?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

संचार के माध्यम

- विभिन्न छावनियों के सिपाहियों के बीच अच्छा संचार बना हुआ था।
- रात में सिपाहियों की पंचायतें जुड़ती थी और उनमें सामूहिक रूप से फैसले लिये जाते थे।
- ये योजनाएँ कैसे बनायी गयी ?
- योजनाकार कौन थे ?
- मौजूदा दस्तावेजों के आधार पर इन सवालों के सीधे सीधे जवाब देना कठिन है।

उदाहरण :-

7वी अवध इर्रेग्यूलर इनफैंटरी (कारतूस)

"हमनें अपने धर्म की रक्षा के लिए फैसले लिए हैं, और 48 नेटिव इंफैंटरी के हुक्म का इंतजार है"

- संभवतया इस विद्रोह की योजना लंदन में बनायी गयी थी।
  1. अजीमुल्ला खान – नाना साहब के सलाहकार
  2. रंगो जी बापू – सतारा के राजा के सलाहकार
- क्रान्ति का प्रतीक – कमल का फूल और रोटी
- प्रारम्भ करने की तिथि – 31 मई 1857

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सिस्टन और तहसीलदार

विद्रोह और सैनिक अवज्ञा के संदर्भ में सीतापुर के देसी ईसाई पुलिस इंसपेक्टर फ्रांस्वाँ सिस्टन का अनुभव हमें बहुत कुछ बताता है। वह मजिस्ट्रेट के पास शिष्टाचारवश मिलने सहारनपुर गया हुआ था। सिस्टन हिंदुस्तानी कपड़े पहने था और आलथी-पालथी मारकर बैठा था। इसी बीच बिजनौर का एक मुस्लिम तहसीलदार कमरे में दाखिल हुआ। जब उसे पता चला कि सिस्टन अवध में तैनात है तो उसने पूछा, "क्या ख़बर है अवध की? काम कैसा चल रहा है?" सिस्टन ने कहा, "अगर हमें अवध में काम मिलता है तो जनाब-ए-आली को भी पता चल जाएगा।" इस पर तहसीलदार ने कहा, "भरोसा रखो, इस बार हम कामयाब होंगे। मामला काबिल हाथों में है।" बाद में पता चला कि यह तहसीलदार बिजनौर के विद्रोहियों का सबसे बड़ा नेता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



नेता और अनुयायी :-

- अंग्रेजों से लौहा लेने के लिए नेतृत्व और संगठन जरूरी था।
- विद्रोहियों ने ऐसे लोगों की शरण ली जो अंग्रेजों से पहले नेताओं की भूमिका निभाते थे। जिन्हें अंग्रेजों ने उखाड़ फेंका था।

जैसे – मेरठ के सिपाहियों ने दिल्ली पहुंच कर मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर को नेतृत्व स्वीकार करने के लिए मना लिया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कानपुर में पेशवा बाजीराव द्वितीय के उत्तराधिकारी नाना साहब को नेता बनाया।
- झाँसी – रानी लक्ष्मीबाई
- अवध (लखनऊ) – नवाब वाजिद अली शाह के पुत्र बिरजिस कद्र और बेगम हजरत महल
- आरा (बिहार) – जमींदार कुंवर सिंह
- इन विस्थापित शासकों में से अधिकांश स्थानीय लोगों के दबाव के कारण और कुछ अपने स्वयं के उत्साह के कारण विद्रोह में शामिल हुए थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कुछ अन्य स्थानों पर स्थानीय नेता या धार्मिक नेता सामने आ चुके थे।

  जैसे – छोटा नागपुर स्थित सिंहभूम के एक आदिवासी काश्तकार गोनू ने कोल आदिवासियों का नेतृत्व संभाला था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1857 के दो विद्रोही

शाह मल

शाह मल उत्तर प्रदेश के बड़ौत परगना के एक बड़े गाँव के रहने वाले थे। वह एक जाट कुटुम्ब से संबंध रखते थे जो चौरासी देस (चौरासी गाँव) में फैला हुआ था। इस इलाके की ज़मीन सिंचाई की सुविधाओं से लैस और उपजाऊ थी। यहाँ कि मिट्टी काली नम थी। बहुत सारे ग्रामीण संपन्न थे और लोग ब्रिटिश भूराजस्व व्यवस्था को दमनकारी मानते थे : लगान की दर ज़्यादा और वसूली सख़्त थी। नतीजा यह था कि किसानों की ज़मीन बाहरी लोगों के हाथ में जा रही थी। इलाक़े में आने वाले व्यापारी और महाजन ज़मीन पर क़ब्ज़ा करते जा रहे थे।

शाह मल ने चौरासी देस के मुखियाओं और काश्तकारों को संगठित किया। इसके लिए उन्होंने रात के साए में गाँव-गाँव जाकर बात की और लोगों को अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ विद्रोह के लिए तैयार किया। बहुत सारे दूसरे स्थानों की तरह यहाँ भी अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ आंदोलन एक व्यापक विद्रोह में तब्दील हो गया। अब विरोध उत्पीड़न और अन्याय के तमाम चिह्नों के ख़िलाफ़ होने लगा। किसान अपने खेत छोड़कर निकल पड़े और महाजनों व व्यापारियों के घर-बार लूटने लगे। बेदख़ल भूस्वामियों ने छिन चुकी ज़मीनों पर दोबारा क़ब्ज़ा कर लिया। शाह मल के आदमियों ने सरकारी इमारतों पर हमला किया, नदी का पुल ध्वस्त कर दिया और पक्की सड़कों को खोद डाला। इसकी एक वजह यह थी कि वे सरकारी फ़ौजों का रास्ता रोकना चाहते थे। दूसरी वजह यह थी कि पुलों और सड़कों को ब्रिटिश शासन का प्रतीक माना जाता था। उन्होंने दिल्ली में विद्रोह करने वाले सिपाहियों को रसद पहुँचाई और ब्रिटिश हेडक्वार्टर व मेरठ के बीच तमाम सरकारी संचार बंद कर दिया। स्थानीय स्तर पर राजा कहलाने वाले शाह मल ने एक अंग्रेज़ अफ़सर के बंगले में डेरा डाला, उसे "न्याय भवन" का नाम दिया और वहीं से झगड़ों और विवादों का फ़ैसला करने लगे। उन्होंने गुप्तचरी का भी हैरतअंगेज़ नेटवर्क स्थापित कर लिया था। कुछ समय के लिए लोगों को लगा कि फ़िरंगी राज ख़त्म हो चुका है और उनका राज आ गया है। जुलाई 1857 में शाह मल को युद्ध में मार दिया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मौलवी अहमदुल्ला शाह

मौलवी अहमदुल्ला शाह 1857 के विद्रोह में अहम भूमिका निभाने वाले बहुत सारे मौलवियों मे से एक थे। हैदराबाद में शिक्षित शाह काफ़ी कम उम्र में ही उपदेशक बन गए थे। 1856 में उन्हें अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ जिहाद का प्रचार करते और लोगों को विद्रोह के लिए तैयार करते हुए गाँव-गाँव जाते देखा गया था। वे एक पालकी में बैठकर चलते थे। पालकी के आगे-आगे ढोल और पीछे उनके समर्थक होते थे। इसीलिए उन्हें लोग-बाग डंका शाह कहने लगे थे। ब्रिटिश अफ़सर इस बात से परेशान थे कि मौलवी के साथ हज़ारों लोग जुट रहे थे और बहुत सारे मुसलमान उन्हें पैगम्बर मानने लगे थे और समझते थे कि वह इस्लाम के आदर्शों से ओतप्रोत हैं। जब 1856 में वे लखनऊ पहुँचे तो पुलिस ने उन्हें शहर में उपदेश देने से रोक दिया। 1857 में उन्हें फ़ैज़ाबाद जेल में बंद कर दिया गया। रिहा होने पर उन्हें 22वीं नेटिव इन्फेंट्री के विद्रोहियों ने अपना नेता चुन लिया। उन्होंने चिनहाट के विख्यात संघर्ष में हिस्सा लिया जिसमें हेनरी लॉरेंस की अगुवाई वाली टुकड़ियों को मुँह की खानी पड़ी। मौलवी साहब को उनकी बहादुरी और ताकत के लिए जाना जाता था। बहुत सारे लोग मानते थे कि उनको कोई नहीं हरा सकता; उनके पास जादुई शक्तियाँ हैं और अंग्रेज़ उनका बाल भी बाँका नहीं कर सकते। काफ़ी हद तक इसी विश्वास के कारण उन्हें लोगों में इतना अधिकार प्राप्त था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अफवाहें और भविष्यवाणियाँ –

कई तरह की अफवाहों और भविष्यवाणियों के जरिए लोगों को उठ खड़ा होने के लिए उकसाया जा रहा था।

जैसे :–

1. गाय व सुअर की चर्बी का लेप लगे हुए कारतूस।
2. अंग्रेजों ने बाजार में मिलने वाले आटे में गाय और सुअर की हड्डियों का चूरा मिलवा दिया।
3. अंग्रेज हिंदुस्तानियों को ईसाई बनाना चाहते हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

4. भविष्यवाणी : प्लासी के युद्ध के 100 साल पूरे होते ही 23 जून 1857 को अंग्रेजी राज खत्म हो जायेगा।

- इन अफवाहों और भविष्यवाणियों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह करने के लिए महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारण प्रदान किये।